चतुर्थ अध्याय

विश्लेषणात्मक वाक्य-विन्यास-खंडीय तत्त्व

क) कश्मीरी बीजवाक्य (Kernel Sentence) -बीजवाक,

बीजपद (कर्ता + क्रिया : कर्ताविस्तार, क्रियाविस्तार ।

ख) हिन्दी बीजवाक्य — बीज वाक्य — बीज पद (कर्ता+ क्रिया, कर्ता विस्तार, क्रिया विस्तार,

विश्लेषणात्मक वाक्य-विन्यास -अतिखंडीय तत्त्व

क) कश्मीरी वाक्य और सुर, कश्मीरी वाक्य और बलाघात, कश्मीरी वाक्य और सुरक्रम ।

ख) हिन्दी वाक्य और सुर, हिन्दी वाक्य और बलाघात, हिन्दी वाक्य और सुर-क्रम, हिन्दी वाक्य और विराम ।

चतुर्थ अध्याय

विश्लेषणात्मक वाक्य-विन्यास

खण्डीय तत्व

विश्लेषणा और संश्लेषणा सापेक्षिक प्रयोग हैं । संश्लेषणात्मक दृष्टि से समीक्षा करते समय वाक्यान्तर्गत संश्लेषणात्मक प्रक्रिया पर ही ध्यान केन्द्रित रहा है, फिर भी स्थान-स्थान पर विश्लेषणात्मकता की ओर संकेत किया गया है । इस प्रकार का प्रयास मूलत: संश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए हो हुआ है ।[1]

विश्लेषणा विज्ञान की अनिवार्यता है । विश्लेषणात्मक अध्ययन में अध्येता की मुख्य दृष्टि यह रहती है कि नियोजक-तत्वों की प्रकृति और प्रवृत्ति को समझ कर, उसके सहयोग से बने पूर्ण को उसके वास्तविक रूप में समझा जाए । जैसे शरीर - विज्ञान में शल्यन-प्रक्रिया शरीर शरीर के पूर्ण ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण साधन है, वैसे ही भाषा में वाक्य के पूर्ण ज्ञान के लिए उसके प्रत्येक अवयव को विश्लिष्ट करना

1- डॉ० सुधा कालरा, "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०-267

अनिवार्य है ।[1] प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषण मूलक योजना को ध्यान में रखते हुए अध्ययन किया गया है ।

व्यक्त चिन्तन के मूल में अव्यक्त बीज-चिन्तन रहता है । जैसे-जैसे आन्तरिक चिन्तन अव्यक्त रूप से अपनी शाखा प्रशाखाओं का प्रसार करता है, वैसे ही वैसे वाक्य के रूप में व्यक्त चिन्तन भी सर्वाधिक विस्तार पाता है । भाषा के बीज वाक्यों के सब अवयवों का विस्तार दिखाया गया है । तदुपरान्त वाक्य की अन्य विश्लेषणमूला योजनाओं क्रम, सक्रियता, मैत्री, व्यवस्था, निकटस्थ-अवयव तथा रूपान्तरण का अध्ययन किया गया हैं । ये सब विश्लेषणमूलक अध्ययन के खंडीय तत्व है ।[2]

भाषा-योजना के कुछ ऐसे सतत सक्रिया एवं महत्वपूर्ण तत्व भी निरन्तर पाए जाते हैं जिन्हें सामान्यत: स्वीकृति लिपि में स्थान नहीं मिला है । सुर, सुरक्रम, बलाघात तथा विराम आदि कश्मीरी भाषा के अतिखंडीय तत्त्व हैं । इन तत्त्वों का स्वन-विचार की अपेक्षा वाक्य-विचार की दृष्टि से अधिक महत्तव है, क्योंकि यह अर्थमूलक ऐसी सूक्ष्म व्यवस्थाएँ हैं जिनकी अनभिव्यक्त योजना प्रयोक्ता के मन में सहज भाव से रहती है तथा जो केवल अभिव्यक्ति के समय सुनाई पड़ती हैं ।[3] भाषा वैज्ञानिक उपलब्धियों का आग्रह है कि इन सशक्त अतिखंडीय

1- डॉ० सुधा कालरा : "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 268

2- - वही - - वही - पृ०- 263

3- - वही - - वही - पृ०-263

तत्त्वों का विधिवत् वैज्ञानिक अध्ययन हो । प्रस्तुत विश्लेषणात्मक अध्ययन में खंडीय - तत्त्वों के विस्तृत विवेचन के साथ-साथ इन अति-खंडीय तत्त्वों और इनकी सम्भावनाओं की ओर भी निर्देश किया जा रहा है ।

क) कश्मीरी बीज वाक्य :

बीज वाक्य भाषा की न्यूनतम इकाई है । सामान्यतया प्रत्येक बीज-वाक्य में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में कम-से-कम एक नाम पद तथा एक आख्यात पद की अपेक्षा होती है । लेकिन वाक्य-गत प्रयोजन को पूरा करने वाले कतिपय ऐसे भी प्रयोग होते हैं, जिनमें नाम पद अथवा आख्यात पद को होना अनिवार्य नहीं होता । ये मात्र अव्यय होते हैं । ये भी वाक्य के प्रयोजन की पूर्ति करते हैं, अतः इन्हें अबीज वाक्य कहना उचित है ।[1]

कश्मीरी में नाम पदों का रूपान्तरण, लिंग, वचन, पुरुष, एवं कारक के अनुसार होता है तथा आख्यात पदों का लिंग, वचन, पुरुष, काल, अर्थ, वाच्य आदि के अनुरूप । प्रस्तुत विवेचन का उद्देश्य कश्मीरी बीज वाक्य के केन्द्रस्थ होने पर उसकी विस्तारमूला प्रवृत्ति का निर्देशन कराना है । रूपान्तरण की सब सम्भावनाओं को उदाहृत नहीं किया गया है । प्रवृत्ति निर्देशनार्थ एक-एक रूप ही लिया गया है ।[1]

1- डॉ० सुधा कालरा, " हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 268

बीज वाक्य में दो अवयव अनिवार्य होते हैं -- कर्त्ता अथवा उद्देश्य और विधेय । इसके अतिरिक्त समानाधिकरण, पूरक और कर्म भी ऐसे अवयव हैं ।[1] जिनकी अवस्थिति बीज वाक्यों के लिए सर्वथा परिहार्य नहीं है । प्रस्तुत विवेचन में विधानार्थक वाक्यों में सभी प्रकार के अवयवों का विस्तार दिखा या गया है ।

बीज वाक्य — बीज पद (कर्त्ता + क्रिया)

शुर + छु शोंगान ।

कर्त्ता विस्तार

	:	हिन्दी अनुवाद
शुर छु शोंगान		बालक सोता है
लकुट शुर छु शोंगान		छोटा बालक सोता है ।
परनस मन्ज़ तेज़ लकुट शुर छु शोंगान		पढ़ने में तेज़ छोटा बालक सोता है ।
नूर बरुथ, परनस मन्ज़ तेज़ लकुट शुर छु शोंगान		तेजस्वी, पढ़ने में तेज़, छोटा बालक सोता है ।
असल, नूर बरुथ परनस मन्ज़ तेज़, लकुट शुर छु शोंगान		प्यारा सा, तेजस्वी, पढ़ने में तेज़ छोटा बालक सोता है ।
सारिविय खति खूबसूरत, असल नूर बरुथ, परनस मन्ज़ तेज़ लकुट शुर छु शोंगान ।		सबसे खूबसूरत, प्यारा सा, तेजस्वी और पढ़ने में तेज़ छोटा बालक सोता है ।

1- डॉ० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०-268

चोन सु सारविय खति खूबसूरत, असल नूर बस्थ, परनस मन्ज़ तेज़, लकुट शुर छु शोंगान ।	तुम्हारा वह सबसे सुन्दर, प्यारा सा, तेजस्वी और पढ़ने में तेज़ छोटा बालक सोता है ।

कर्ता का विस्तार विशेषण तक ही सीमित रहता है । विशेषण अपने मूल रूप में किसी भी प्रकार के हो सकते हैं । विशेषण वाक्यांश भी इसी कोटि में आते हैं ।

क्रिया विस्तार :

कश्मीरी में क्रिया विस्तार की दो प्रमुख प्रविधियाँ प्रचलित हैं-- शुद्ध क्रिया विस्तार वाली और क्रिया विशेषण के योग से विस्तृत होने वाली । शुद्ध क्रिया विस्तार से अभिप्राय है वे विस्तारात्मक अव्यय-योग, जिनसे क्रिया वाक्यांश निर्मित होते हैं । इस प्रकार के विस्तार को क्रिया का अन्त: विस्तार कह सकते हैं । इनमें विस्तारात्मक अव्यय मुख्य-क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में आते हैं । यह विस्तार बाएँ से दाहिने होता है । क्रिया विशेषण के योग से विस्तृत होने वाली क्रियाएँ द्विविध होती हैं -- क्रमिक-विस्तार वाली और बाधित विस्तार वाली । क्रमिक विस्तार वाली क्रियाएँ वे होती हैं जिनमें क्रियाविशेषण क्रिया के पास रहता है । बाधित विस्तार वाली वे क्रियाएँ हैं जिनमें क्रिया विशेषण और क्रिया के बीच में अन्य पद आ जाते हैं । क्रिया विशेषण वाला विस्तार तीन प्रकार से सम्भव है । दाहिने से बाएँ, दाहिने और बाएँ साथ-साथ

तथा दाहिने बाएँ, बीच में अन्य पद लिए हुए । इस प्रकार क्रिया-विशेषण वाला विस्तार बाह्य तथा अन्तर-बाह्य दोनों प्रकार से होता है ।

	हिन्दी अनुवाद
बि ति छुस गछान ?	मैं जाती तो हूँ ।
बि छुस दोहय गछान ।	मैं रोज़ जाता हूँ ।
बि ति छुस दोहय गछान ।	मैं रोज़ जाता तो हूँ ।
बि छुस ति दोहय पनुन गरि गछान ।	मैं रोज़ अपने घर जाता तो हूँ ।

शुद्ध क्रिया विस्तार ( )

शुर छु शोंगान	बालक सोता है ।
शुर छुय शोंगान ।	बालक सोता ही है ।
शुर छु सिरफ शोंगान ।	बालक सोता मात्र है ।
शुर छुय ति शोंगान ।	बालक सोता भी तो है ।

क्रमिक एकादिक क्रिया विस्तार ( )

शुर छु शोंगान ।	बालक सोता है ।
शुर छु शोंगान रोज़ान ।	बालक सो जाया करता है ।
शुर छु परान-परान ति शोंगान रोज़ान ।	बालक पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।

शुर छु लर तरावान, परान-परान ति शोंगान रोज़ान ।	बालक लेटे हुए, पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।
शुर छु पलंगस पठ लर तरावान, परान-परान ति शोंगान रोज़ान ।	बालक पलंग पर लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।
शुर छु पनिनिस कुठिस मन्ज़, पलंगस पठ लर तरावान, परान-परान ति शोंगान रोज़ान ।	बालक अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।
शुर छु दोह्य रात कुथ पनिनिस कुठिस मन्ज़ पलंगस पठ लर तरावान, परान-परान ति शोंगान रोज़ान ।	बालक रोज़ रात को अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।
शुर दोद येथ दोह्य रात कुथ पनिनिस कुठिस मन्ज़ पलंगस पठ लर तरावान परान-परान ति शोंगान रोज़ान ।	बालक दूध पीकर रोज़ रात को अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।
क्रमिक द्विविक् क्रिया विस्तार ‖	‖
शुर छु शोंगान	बालक सोता है ।
शुर छुय दोह्य शोंगान	बालक रोज़ सोता है ।

बाधित क्रिया विस्तार ४ ४

शुर छु शोंगान ।	बालक सोता है ।
शुर छु दोहय माजि निश ति शोंगान ।	बालक रोज़ माँ के पास सोता भी है ।
शुर छु दोहय राथ कुथ पनिनि माजि निश ति शोंगान ।	बालक रोज़ रात को अपनी माँ के पास सोता भी तो है ।

बीज वाक्य — बीजपद ४ उद्देश्य + पूरक + क्रिया ४

महेन्द्र छु ब्रहमण ।

पूरक विस्तार —

महेन्दर छु ब्रहमण ।	महेन्द्र ब्राह्मण है ।
महेन्दर छु नूरबरुथ ब्रहमण ।	महेन्द्र तेजस्वी ब्राह्मण है ।
महेन्द्रर छु परोन नूरबरुथ ब्रहमण	महेन्द्र गौर वर्ण, तेजस्वी ब्राह्मण है ।
महेन्दर छु सदाचारी परोन नूरबरुथ ब्रहमण ।	महेन्द्र सदाचारी गौर वर्ण, तेजस्वी ब्राह्मण है ।
महेन्दर छु ग्यानी सदाचारी प्रोन नूरबरुथ ब्रहमण ।	महेन्द्र ज्ञानी, सदाचारी, गौर वर्ण तेजस्वी ब्रह्मण है ।
महेन्दर छु थदि कुलुक ग्यानी सदाचारी प्रोन नूरबरुथ ब्रहमण ।	महेन्द्र उच्च कुल का ज्ञानी, सदाचारी, गौर वर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है ।
महेन्दर छु बनारसुक थदिकुलुक ग्यानी, सदाचारी प्रोन नूर-बरुथ ब्रहमण ।	महेन्द्र बनारस के उच्च कुल का ज्ञानी, सदाचारी गौर वर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है ।

बीज वाक्य — बीजपद (कर्त्ता + समानाधिकरण + क्रिया)

सरोज + मास्टरबाय + आयि ।

समानाधिकरण विस्तार —

सरोज मास्टरबाय आयि	सरोज प्राध्यापिका आई ।
सरोज, हिन्दीयिच मास्टरबाय आयि ।	सरोज हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।
सरोज, जान परनावान वाजेन हिन्दीयिच मास्टरबाय आयि ।	सरोज अच्छा पढ़ाने वाली हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।
सरोज, कालिजस मन्ज़ जान परनावन वाजेन हिन्दीयिच मास्टर बाय आयि ।	सरोज, कालेज में अच्छा पढाने वाली हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।
सरोज ज़नान कालिजस मन्ज़ परनावन वाजेन हिन्दीयिच मास्टरबाय आयि ।	सरोज, महिला कालिज में पढाने वाली हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।

कश्मीरी बीजवाक्य — बीजपद (कर्त्ता + कर्म + क्रिया)

बि + छुस + वुछान + मकान ।

कर्म विस्तार —

बि छुस वुछान मकान ।	मैं मकान देखता हूँ ।
बि छुस किननवोल मकान वुछान ।	मैं बिकाऊ मकान देखता हूँ ।

बि छुस सथपोर किननवोल मकान विछान	मैं सत–मंज़िला बिकाऊ मकान देखता हूँ ।
बि छुस फुटमुत सथपोर किननवोल मकान विछान	मैं खण्डहर होता हुआ सत–मंज़िला बिकाऊ मकान देखता हूँ ।
बि छुस दिल्ली हुन्द फुटमुत सथपोर किननवोल मकान विछान	मैं दिल्ली स्थित खण्डहर होता हुआ सत–मंज़िला बिकाऊ मकान देखता हूँ ।
बि छुस बड दिल्लीहोंद फुटमुत सथपोर किननवोल महान विछान	मैं बड़ा दिल्ली वाला, टूट–टूट कर खण्डर होता हुआ सतमंज़िला मकान देखता हूँ ।

कश्मीरी बीज–वाक्य – बीजपद {कर्त्ता + कर्म + कर्मपूरक–क्रिया}

मोहन + समुझ + रज़ि + सरप

कर्मपूरक विस्तार —

मोहनन समुझ रज़ि सर्फ	मोहन ने रस्सी को साँप समझा ।
मोहनन समुझ रज़ि ज़हरवोल सर्फ ।	मोहन ने रस्सी को ज़हरीला साँप समझा ।
मोहनन समुज रज़ि कस्हुन ज़हरवोल सर्फ ।	मोहन ने रस्सी को काला ज़हरीला साँप समझा ।
मोहनन समुज रज़ि वयोट कस्हुन ज़ाहरवोल सर्फ ।	मोहन ने रस्सी को बडा, काला ज़हरीला साँप समझा ।

कश्मीरी बीज वाक्य – बीजपद {कर्त्ता + गौण + मुख्य कर्म + क्रिया}

शाशि + छे दिवान + सुमनस + सैंड़ि

मुख्य कर्म विस्तार :-

शाशि छे दिवान सुमनस सडि	शाशि सुमन को साड़ी देती है ।
शाशि छे दिवान सुमनस नीज सडि ।	शाशि सुमनको नीली साड़ी देती है
शाशि छे दिवान सुमनस अख नपि-नपि करवन्य नीज सड़ि ।	शाशि सुमन को एक चमकदार नीली साड़ी देती है ।
शाशि छे दिवान सुमनस बनारसच अख नपि-नपि करवन्य नीज सड़ि ।	शाशि सुमन को बनारस की एक चमकदार नोली साड़ी देती है ।
शाशि छे दिवान सुमनस पनिन बनारसच अख नपि-नपि करवन्य नीज सड़ि ।	शाशि सुमन को अपनी बनारस की एक चमकदार नीली साड़ी देती है ।

गौण कर्म विस्तार :-

शाशि छे दिवान सुमनस सड़ि	शाशि सुमन को साड़ी देती है ।
शाशि छे दिवान बयनि सुमनस सड़ि ।	शाशि बहन सुमन को साड़ी देती है ।
शाशि छे दिवान लकचि बयनि सुमनस सडि ।	शाशि छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।
शाशि छे दिवान शोतान लकचि बयनि सुमनस सड़ि ।	शाशि शोतान, छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।
शाशि छे दिवान खूबसूरत हिशि शोतान लकचि बयनि सुमनस सड़ि ।	शाशि सुन्दर सी शोतान छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।

शशि छै दिवान प्रनि खूबसूरत हिशि शैतान लकचि बयनि सुमनस सड़ि ।	शशि गौर वर्ण, सुन्दर सी, शैतान छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।
शशि छै दिवान नीजि अछि वाजनिय प्रनि खूबसूरत हिशि शैतान लकचित बयनि सुमनस सड़ि ।	शशि नीली आँखों वाली, गौर वर्ण, सुन्दर सी शैतान छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।
शशि छै दिवान पननि नीजि अछि वाजनिय प्रनि खूबसूरत हिशि शैतान लकचि बयनि सुमनस सड़ि ।	शशि अपनी नीली आँखों वाली गौर वर्ण, सुन्दर सी, शैतान छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बीज वाक्यों के सब अंगों का विस्तार सम्भव है । ये वाक्य भाषा के आधार है । इनसे भाषा का मूल ढाँचा स्पष्ट हो जाता है ।

विश्लेषणात्मक वाक्य – विन्यास : अतिखंडीय तत्त्व

भाषा का मूलभूत उद्देश्य पारस्परिक सम्बुध्यता है । वस्तुतः यही भाषा की सिद्धि है । इसे प्राप्त करने के लिए बोध के प्रारम्भ से ही मनुष्य अनेक उपादानों के प्रति ज्ञात अथवा अज्ञात रूप से निष्ठावान रहा है । विकास के साथ बोध-वृत्ति के निरन्तर परिष्करण के कारण

उसका ध्यान निकट और दूर दोनों की ओर रहा है । जहाँ एक ओर उसने निकट को पूरी तरह जानने का प्रयत्न किया है, वहाँ दूसरी ओर यह प्रयत्न भी किया है कि वह अनभिव्यंजित अनुभूतियों एवं विचारों को अधिक स्पष्ट एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करे । उसकी यह आकांक्षा प्रत्येक क्षेत्र में समान रूप से क्रियाशील दृष्टिगोचर होती है ।

मनुष्य की भाषा में अभी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, ऐसी अनेकानेक विच्छितियाँ हैं जिनका वैज्ञानिक एवं तर्क सम्मत प्रस्तुतीकरण दीर्घकाल से अपेक्षित है । भाषाविदों का ध्यान भाषा में निहित शक्ति तत्त्वों उवं उपादानों के उद्घाटन की ओर लगा है । ऐसे अनेक तत्त्वों में एक विराम है ।[1] वाक्य के योजक तत्त्वों के बीच व्याकरणिक व्यवस्था के अतिरिक्त एक सूक्ष्म व्यवस्था भी रहती है । सुर, सुरक्रम, बलाघात और विराम शीर्षकों के अन्तर्गत इस सूक्ष्म व्यवस्था का अध्ययन हो रहा है ।

कश्मीरी वाक्य और सुर :

भाषागत बोध, मात्र शब्द ज्ञान और व्याकरणिक व्यवस्था पर ही आधृत नहीं है । इसके लिए कतिपय सूक्ष्म औद्भूतियाँ भी अपेक्षित हैं ।सुर एक ऐसी हो औद्भूति है । सुर - तन्त्रियो की बदलती हुई क्षिप्रता से यह निस्सृत होती है । भाषागत सुर सापेक्ष होता है, निरपेक्ष नहीं । संगीत में सामान्यतया निरपेक्ष सुर की अवस्थिति भी पाई

1- डॉ० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०-336

जाती है ।[1]

सुर – विधान :– कश्मीरी का सुर–विधान, स्वर–तन्त्रियों में पाई जाने वाली क्षिप्रता की दृष्टि से 1 से लेकर 4 तक अवस्थित रहता है । यदि स्तर की स्थिति को 2 के द्वारा व्यक्त किया जाए तो 3 और 4 को आरोह मूलक और 1 को अवरोहमूलक कहना समीचीन होगा ।

सीमान्तिक रेखाएँ :–

सीमान्तिक रेखाएँ सुर–योजना के अनुरूप निर्मित होती है । एक ही संरचना में प्रयोजन की दृष्टि से सुर–योजना भिन्न होने पर, भिन्न सुर–रेखाएँ बनती हैं । ' चि़ पकुख ' वाक्य को लेकर सीमान्तिक रेखाओं की परिवर्तन मूलक निर्मिति को अंकित किया जा रहा है ।

चि़^{2} पकुख^{2} । §सामान्य कथन

चि़^{2} पकुख^{3} ? §प्रश्न §

चि़^{3} पकुख^{2} §विस्मय§

चि़^{2} पकुख^{3} §खेद§

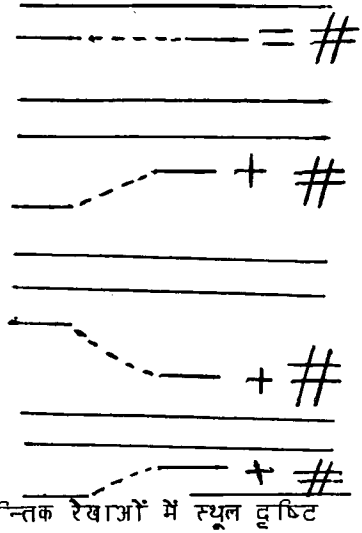

दूसरे और चौथे वाक्यांकनों में सीमान्तिक रेखाओं में स्थूल दृष्टि

1– डॉ0 सुधा कालरा –"हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ0–336

से कोई भेद नहीं है । लेकिन, सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर इनमें परिणाति-मूलक भेद देखा जा सकता है । दूसरा वाक्य प्रयोजन की दृष्टि से प्रश्न मूलक है, चौथा खेद मूलक । दूसरे में सुर 2 से 3 पर पहुँच कर, कुछ रुक कर विराम की स्थिति पर पहुँचता है, चौथे में भी सुर 2 से 3 पर पहुँचा है । लेकिन यहाँ 3 की स्थिति देर तक बनी रहकर विराम की स्थिति पर पहुँची है । विराम की स्थिति से पूर्व ठहराव की स्थिति अन्त में अवरोह-मूला हो गई है, जिसे योग के चिह्न ‖ + ‖ के बाद ऋणा के , चिह्न ‖ - ‖ के द्वारा अंकित किया गया है ।

सूत्रमूलक दृष्टि से —

प्रथम / 2 ⟶ 2 = #

द्वितीय / 2 ⟶ 3 + #

तृतीय / 3 ⟶ 2 + #

चतुर्थ / 2 ⟶ 3 + - #

नीचे कतिपय अन्य उदाहरण लेकर कश्मीरी में सुर की स्थिति को देखन को प्रयत्न किया जा रहा है ।

शाम[2] गोव[3] गरि[4] ?

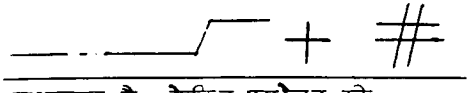

संरचनात्मक रूप में यह वाक्य कथनमूलक है, लेकिन प्रयोजन को दृष्टि से यह वाक्य प्रश्नमूलक है । ऐसी स्थितियों को विशिष्ट ही माना जा सकता है । सामान्य नहीं । प्रस्तुत उदाहरण में स्तरीय

दृष्टि 'गरि' तक है, अर्थात् स्वर की दृष्टि से श्याम और 'गरि' समान स्तर पर हैं । 'गोव' क्षिप्ततर सुर है । इस प्रकार उक्त उदाहरण में 'श्याम' और 'गरि' सुरात्मक दृष्टि से एक परिवृत्त में हैं, 'गोव' दूसरे में ।

2 3 4 1
श्याम गोव गरि ?

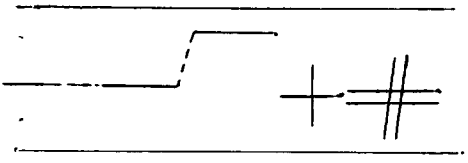

इस उदाहरण में श्याम पर स्तरीय स्वर हैं । यह वाक्य आरोही स्वर मूलक है । 'श्याम' की अपेक्षा 'गर' पर स्वर क्षिप्ततर और 'गोव' के ग पर क्षिप्ततम है । 'व' तक पहुँच कर स्वर अवरोही-मूली होकर परिसमाप्ति के समय । पर पहुँच गया है । इस वाक्य में विस्मय समन्वित प्रश्न है ।

2 3 2 1 1 1 1
बि छुस करान मोहनन वन

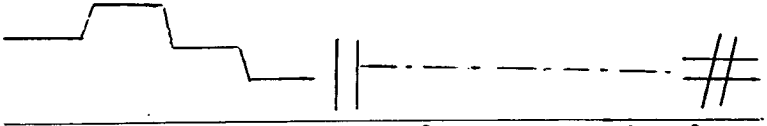

इस उदाहरण में पहले उपवाक्य का अन्तिम स्वर स्तर ही अगले उपवाक्य में अवरोह-मूलक हो गया है ।

2 2 2 3 2 3 2 1
मोहनन वन बि छुस करान

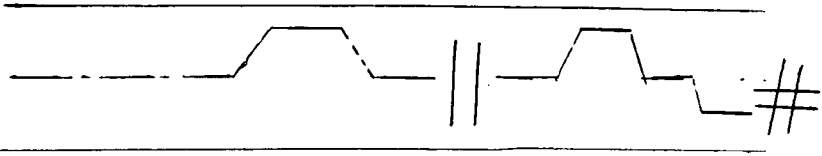

इस वाक्य में पहले उपवाक्य का अन्तिम स्वर–स्तर दूसरे वाक्य के प्रथम स्वर–स्तर तक प्रसरित है । आगे उसमें अपेक्षाकृत अधिक क्षिप्रत: आ गई हैं, जो तुरन्त अवरोही होकहर अन्त में । पर आकर परिणति को पहुँच गई है ।

22 3 2 3 3 2 1 4 3 2 2 1
चानि खतरि ! मन छुम चहान, सोरिय करि ।

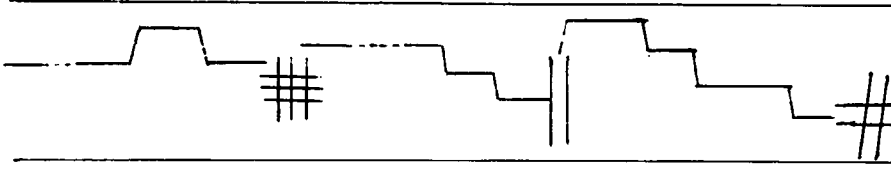

इस उदाहरणउमें भावावेश–मूलक स्थितियाँ हैं । वाक्यांशों और उपवाक्यों में प्रथम वाक्यांश में स्नेह–मूलक सम्बोधन है। इसमें 'खतरि' के भाग पर अपेक्षाकृत क्षिप्रतर स्वर है जो अपेक्षित उतार के कारण स्तरीय स्वर पर आ गया है । दूसरे उपवाक्य में एकाक्षरी पद 'मन' पर सुर फिर क्षिप्रतर होकर 'चहान' के आदि भाग 'चाह' तक जाकर स्तर पर आ गई है । 'छुम' तक पहुँचते–पहुँचते यह अवरोही होकर स्तरीय–स्वर से भी नीचे आ गया है । तीसरे वाक्यांश 'सोरिय कहं' में 'सोरिय' पर सुर क्षिप्रतम हो गया है, तदुपरान्त 'कंह' पर अवरोही होता हुआ अन्तिम वाक्यांश 'करिं' पर पहुँच कर स्तर से भी नीचे पहुँच कर परिणाति को प्राप्त होकर समाप्त हो गया है ।

विचारणीय बात यह है कि सामान्यतया स्वर स्तर से शुरू होते हैं । ये मध्य में क्षिप्रतर अथवा क्षिप्रतम विशिष्ट स्थितियों में ही

सम्भव है । उपन्यास में क्षिप्रतर अथवा क्षिप्रतम स्थिति सम्भव बनी रहती है। सहायक क्रियाओं तक पहुँचते पहुँचते सुर की स्थिति स्तर से भी नीचे चली जाती है । यदि, वह । तक नहीं पहुँचती है तो अवरोह-मूलक परिणति को प्राप्त अवश्य हो जाती है । उक्त के अन्त में दीर्घ स्वर-मूलक अक्षर प्रायः अवरोही हो जाते हैं । प्रश्न तथा विस्मय अथवा तीक्ष्ण सन्देह की स्थिति में ही इसके विपरीत स्थिति देखने को मिलती है ।

कश्मीरी वाक्य और बलाघात :

बलाघात भी एक अतिखंडीय औद्भूति है। वक्ता के अभिप्राय से अनुप्राणित होकर बलाघात सामान्य भाषा में एक नया अर्थ भर देता है ।[1]

कश्मीरी में बलाघात दो प्रकार का पाया जाता है -- शब्दान्तर्गत अक्षर मूलक, वाक्यान्तर्गत शब्द मूलक । प्रस्तुत अध्ययन कश्मीरी वाक्य से सम्बद्ध है । अतः यहाँ वाक्य में पाए जाने वाले बलाघात पर विचार करना ही अभिप्रेत है ।

सुर और बलाघात :-

सुर और बलाघात में अत्यन्त अन्तर है। सुर में आरोह-अवरोह मूलक सम्बन्ध - निर्वाह पर विशेष बल दिया जाता है, बलाघात में शब्द विशेष पर अधिक बल दिया जाता है अर्थात् बलाघात में स्वर-

---

1- डा० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०-34।

तन्त्रियों में खिचाव आ जाता है । सुर मूलक स्थिति में स्वर-तन्त्रियों में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित के अनुरूप लचीलापन रहता है ।[1]

उदाहरण देकर मन्तव्य को स्पष्ट किया जा रहा है ।

'शाम छु सड़कि पठ गछान '

इस वाक्य में 'शाम' पर बलाघात होने से सड़क पर कौन जा रहा है ? प्रश्न का उत्तर मिल रहा है । इसके विपरीत यदि हम 'पठ गछान' पर बल दें तो शाम सड़क पर क्या कर रहा है ? प्रश्न का उत्तर मिलेगा --- 'शाम छु सडकि पठ गछान '

वाक्यान्तर्गत बलाघात :-

कश्मीरी में वाक्यान्तर्गत बलाघातीन प्रकार के पाए जाते हैं-- प्राथमिक, द्वितीय, तृतीय ।

कश्मीरी में प्राथमिक बलाघात प्रायः दो उपवाक्यों के संयोजक तत्वों में पाया जाता है --

शामन वन गछानिय कि बि गछनि ।

मोहनस वन कि सु यीयनि योर ।

मोहन छु गछनस तैयार मगर गछित ह्यकनि ।

सामान्यतया कश्मीरी में बलाघात संज्ञापद और क्रिया-पदों पर रहता है । संयोजक तत्त्वों पर पाया जाने वाला यह बलाघात विशेष स्थिति मूलक है ।

1- सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ0-34।

एकपदीय वाक्य :-

बलाघात एक शब्द वाले वाक्यों में पाया जाता है ।

शाम

इळर

वाक्य के अर्थ में बलाघात से निश्चय ही एक विशेषता आ जाती है । भाषा की यह विशेष औद्भूति बोलने में ही नहीं । लिखित भाषा में भी बलाघात विह्न देकर स्पष्ट की जा सकती है ।

कश्मीरी वाक्य और सुर-क्रम :

सुर क्रम एक वाग्मूला औद्भूति है । वक्ता और रचना के बीच एक सापेक्षिक सम्बन्ध होता है, किसी भी एक रचना को वक्ता की मनःस्थिति के अनुरूप वाणी के माध्यम से विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है । इस विविध प्रस्तुतीकरण में सुर-क्रम विशिष्ट महत्व होता है ।[1] अर्थमूलक होने के नाते वाक्य-विचारान्तर्गत इसका अपना महत्व है ।

सुर-क्रम के प्रकार :-

क्रम पर विचार करते हुए कहा जा चुका है कि वाक्य अथवा वाक्यों में पद का स्थान अर्थ सापेक्ष होता है । यदि क्रम में ही परिवर्तन हो जाए, तो भिन्न मनःस्थिति के ही पद-योजना में सुर क्रम-मूलक अन्तर आ जाता है । इस प्रकार कश्मीरी में दो प्रकार का सुर क्रम पाया जाता है । एक का सम्बन्ध वक्ता की बदलती हुई मनःस्थिति से होता है । इस स्थिति

1- डॉ० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 343

में क्रम में परिवर्तन अथवा अपरिवर्तन होने से कोई अन्तर नहीं आता । दूसरे का सम्बन्ध क्रमान्तर से होता है । इसमें वक्ता की मनःस्थिति का महत्व गौण होता है, क्रम स्वयं निर्णायक होता है । हम दोनों प्रकार के उदाहरण लेकर कश्मीरी की इस महत्वपूर्ण औद्भूति को चित्रित करने का प्रयास कर रहे हैं ।

क्रमान्तर औरद सुर-क्रम :-

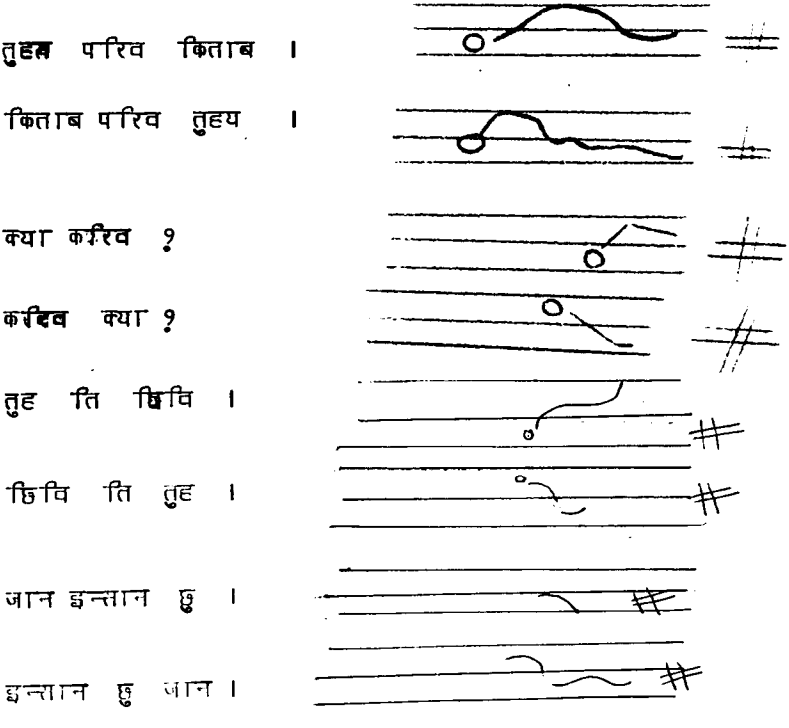

1- डा० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०-343

बि छुसिय न ।

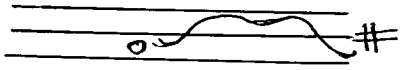

बि न छुसिय न ।

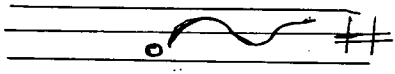

क्रमान्तर न होने पर भी विराम-चिह्नों के परिवर्तन से एक ही वाक्य होने पर भी सुर-क्रम में भिन्नता आ जाती है ।[2]

अज़ छु गरम (सामान्य कथन) अज़ छै गरमी ? (प्रश्न मूलक)

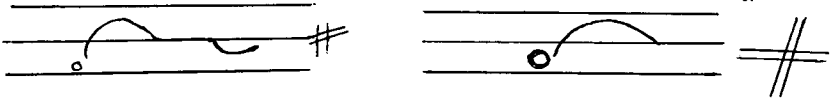

अज़ छै गरमी ! (विस्मय मूलक)

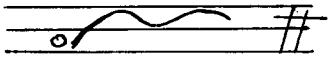

वाक्य की मनःस्थिति और सुर-क्रम :

वक्ता की मनःस्थिति के अनुसार कुछ वाक्यों में अर्थाश्रित सुर-क्रम मूलक भिन्नता पाई जाती है ।[3]

वलिव हज़ मीयिव । (प्रार्थना मूलक)

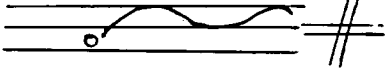

कंम करिव (आदेश मूलक)

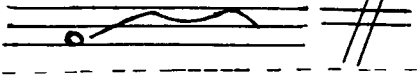

खर सुंद कटेरि ‖अपशब्द‖ 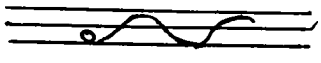

तमिस गढ़िन बतर । ‖अभिशाप मूलक‖ 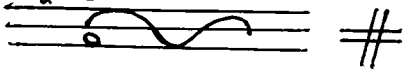

खश रोज़ ‖वरदान मूलक ‖ 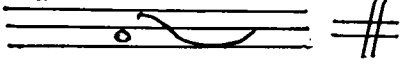

एकपदीय वाक्य : –

एकपदीय वाक्यों में भी सुर–क्रम के द्वारा विभिन्न अर्थों की योजना सम्भव हो सकती है ।

अछा ‖सहज स्वीकृति ‖ 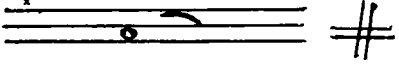

अछा ‖सन्देह ‖ 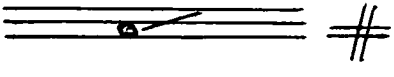

अच्छा ? ‖प्रश्न‖ 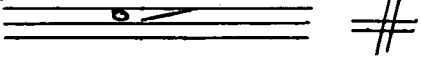

अछा ! ‖विस्मय‖ 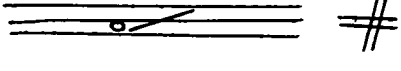

हिन्दी का विश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास : खंडीय तत्त्व

बीजवाक्य :– हिन्दी में नाम पदों का रूपान्तरण, लिंग, वचन,

पुरुष एवं कारक के अनुसार होता है तथा आख्यात पदों का लिंग, वचन, पुरुष, काल, अर्थ, वाच्य आदि के अनुरूप । प्रस्तुत विवेचन का उद्देश्य हिन्दी बीज वाक्य के केन्द्रस्थ होने पर उसकी विस्तार-मूला प्रवृत्ति का निर्देशन कराना है ।[1]

बीज-वाक्य — बीज-पद {कर्त्ता + क्रिया}

बालक + सोता है ।

कर्त्ता विस्तार —

बालक सोता है ।

छोटा बालक सोता है ।

पढ़ने में तेज़, छोटा बालक सोता है ।

तेजस्वी, पढ़ने में तेज़, छोटा बालक सोता है ।

प्यारा सा, तेजस्वी, पढ़ने में तेज़, छोटा बालक सोता है ।

सबसे सुन्दर, प्यारा सा, तेजस्वी, पढ़ने में तेज़ छोटा बालक सोता है ।

वह सबसे सुन्दर, प्यारासमा, तेजस्वी, पढ़ने में तेज़, छोटा बालक सोता है ।

अध्यका सबसे सुन्दर, प्यारा सा, तेजस्वी, पढ़ने में तेज़, छोटा बालक सोता है ।

क्रिया विस्तार :-

हिन्दी में क्रिया विस्तार की दो प्रमुख प्रविधियाँ प्रचलित हैं — शुद्ध क्रिया विस्तार वाली और क्रि या विशेषण के योग से विस्तृत

1- डॉ० सुधा कालरा "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०-269

होने वाली । शुद्ध क्रिया विस्तार से अभिप्राय है वे विस्तरात्मक अव्यय योग, जिनसे क्रिया वाक्यांश निर्मित होते हैं । इस प्रकार के विस्तार को क्रिया का अन्त: विस्तार कह सकते हैं । इनमें विस्तारात्मक अव्यय मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में आते हैं । यह विस्तार बाएँ से दाएँ होता है। क्रियाविशेषण के योग से विस्तृत होने वाली क्रियाएँ द्विविध होती हैं -- क्रमिक विस्तारवाली और बाधित विस्तार वाली । क्रमिक विस्तारवाली क्रियाएँ वे होती हैं जिनमें क्रियाविशेषण क्रिया के पास रहता है । बाधित विस्तारवाली वे क्रियाएँ हैं जिनमें क्रियाविशेषण और क्रिया के बीच में अन्य पद आ जाते हैं । क्रिया-विशेषण वाला विस्तार तीन प्रकार से सम्भव है । -- दाहिने से बाएँ, दाहिने और बाएँ साथ-साथ तथा दाहिने बाएँ, बीच में अन्य पद लिए हुए । इस प्रकार हिन्दी में क्रियाविशेषण वाला विस्तार बाह्य तथा अन्तर-बाह्य दोनों प्रकार से होता है ।[1]

मैं जाती तो हूँ ।

मैं रोज़ जाती हूँ ।

मैं रोज़ जाती तो हूँ ।

मैं रोज़ अपने घर जाती तो हूँ

शुद्ध क्रिया-विस्तार ( )

बालक सोता है ।

1- डॉ0 सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ0-269

बालक सोता ही है ।

बालक सोता मात्र है ।

बालक सोता भी तो है ।

क्रमिक एकदिक् क्रिया-विस्तार ( )

बालक सोता है ।

बालक सो जाया करता है ।

बालक पढ़ते-पढ़ते/सो जाया करता है ।
भी

बालक लेटे हुए, पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।

बालक पलंग पर लेटे हुए, पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।

बालक अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए, पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।

बालक रोज़ रात को, अपने कमरे में, पलंग पर, लेटे हुए, पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।

बालक दूध पीकर रोज़ रात को, अपने कमरे में, पलंग पर, पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है ।

क्रमिक द्विदिक क्रिया-विस्तार ( )

बालक सोता है ।

बालक रोज़ सोता ही है ।

बालक रोज़ रात को सोता ही तो है ।

बाधित क्रिया विस्तार ( ) .... (— ।—)

बालक सोता है ।

बालक रोज़ माँ के पास सोता भी है ।

बालक रोज़ रात को अपनी माँ के पास सोता भी तो है ।

बीजवाक्य – बीजपद {उद्देश्य + पूरक + क्रिया }

महेन्द्र + ब्राह्मण + है ।

पूरक विस्तार —

महेन्द्र ब्राह्मण है ।

महेन्द्र तेजस्वी ब्राह्मण है ।

महेन्द्र गौर वर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है ।

महेन्द्र सदाचारी गौर वर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है ।

महेन्द्र ज्ञानी सदाचारी गौर वर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है ।

महेन्द्र धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौर वर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है ।

महेन्द्र उच्च कुल का धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौर वर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है

महेन्द्र बनारस के उच्चकुल का धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौरवर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है ।

बीजवाक्य — बीजपद {कर्त्ता + समानाधिकरण + क्रिया }

सरोज + प्राध्यापिका + आई ।

समानाधिकरण विस्तार —

सरोज, प्राध्यापिका आई ।

सरोज हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।

सरोज अच्छा पढ़ाने वाली, हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।

सरोज कालेज में अच्छा पढ़ाने वाली, हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।

सरोज दिल्ली के कालेज में अच्छा पढ़ाने वाली, हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।

सरोज भारत की राजधानी दिल्ली के कालेज में अच्छा पढ़ाने वाली, हिन्दी की प्राध्यापिका आई ।

कर्म विस्तार —

मैं मकान देखती हूँ ।

मैं बिकाऊ मकान देखती हूँ ।

मैं सतमंज़िला बिकाऊ मकान देखती हूँ ।

मैं खण्डहर होता हुआ, सतमंज़िला बिकाऊ मकान देखती हूँ ।

मैं टूट-टूट कर खण्डहर होता हुआ, सतमंज़िला बिकाऊ मकान देखती हूँ ।

मैं दिल्ली वाला, टूट-टूट कर खण्डहर होता हुआ सतमंज़िला बिकाऊ मकान देखती हूँ ।

मैं बड़ा दिल्ली वाला, टूट-टूट कर खण्डहर होता हुआ, सतमंज़िला, बिकाऊ मकान देखती हूँ ।

बीज वाक्य — बीज पद {कर्त्ता + गौण + मुख्य कर्म + क्रिया}

शाश्वि + सुमन को + साड़ी + देती है ।

मुख्य कर्म विस्तार —

शाश्वि सुमन को साड़ी देती है ।

शाश्वि सुमन को नीली साड़ी देती है ।

शशि सुमन को एक चमकदार नीली साड़ी देती है ।

शशि सुमन को बनारस की एक चमकदार नीली साड़ी देती है ।

शशि सुमन को अपनी बनारस की एक चमकदार नीली साड़ी देती है ।

गौण कर्म विस्तार --

शशि सुमन को साड़ी देती है ।

शशि बहन/सुमन को साड़ी देती है ।

शशि छोटी बहन सुकन को साड़ी देती है ।

शशि शैतान छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।

शशि सुन्दर सी, शैतान, छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।

शशि गौर वर्णा, सुन्दर सी, शैतान, छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।

शशि नीली आँखों वाली, गौर वर्णा, सुन्दर सी, शैतान, छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।

शशि अपनी नीली आँखों वाली, गौर वर्णा, सुन्दर सी, शैतान, छोटी बहन सुमन को साड़ी देती है ।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बीज वाक्यों के सब अंगों का विस्तार सम्भव है । ये वाक्य भाषा के आधार हैं । इससे भाषा का मूल ढाँचा स्पष्ट हो जाता है ।

हिन्दी का विश्लेषणात्मक वाक्य-विन्यास – अतिखंडीय तत्त्व

हिन्दी वाक्य और सुर : हिन्दी का सुर-विधान, स्वर तन्त्रियों में पाई जाने वाली क्षिप्रता की दृष्टि से 1 से लेकर 4 तक अवस्थित रहता है यदि स्वर की स्थिति 2 के द्वारा व्यक्त किया जाए तो 3 और 4 को आरोह मूलक और 1 को अवरोह मूलक कहना समीचीन होगा ।[1]

सीमान्तिक रेखाएँ :-

सीमान्तिक रेखाएँ सुर-योजना के अनुरूप निर्मित होती हैं । एक ही प्रकार की संरचना में प्रयोजन की दृष्टि से सुर-योजना भिन्न होने पर, भिन्न सुर-रेखाएँ बनती हैं ।[2] हिन्दी के 'तू चला' वाक्य को लेकर सीमान्तिक रेखाओं की परिवर्तन मूलक निर्मिति को अंकित किया जा रहा है :-

तू² चला² {सामान्य कथन}

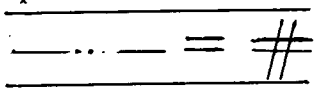

तू³ चला² ! {विस्मय}

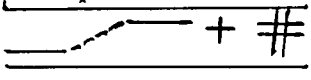

तू² चला³ {खेद}

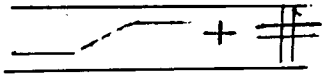

1– डॉ० संधा कालरा – "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०– 338

2–

3–

दूसरे और चौथे वाक्यांकनों में सीमान्तिक रेखाओं में स्थूल दृष्टि से कोई भेद नहीं है । लेकिन, सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर इनमें परिणाति मूलक भेद देखा जा सकता है । दूसरा वाक्य प्रयोजन की दृष्टि से प्रश्न मूलक है, चौथा खेद मूलक । दूसरे वाक्य में सुर 2 से 3 पर पहुँच कर कुछ रुक विराम की स्थिति पर पहुँचा है, चौथे वाक्य में भी सुर 2 से 3 पर पहुँचा है । लेकिन यहाँ 3 की स्थिति देर तक बनी रहकर विराम की स्थिति पर पहुँची है । विराम की स्थिति से पूर्व ठहराव की स्थिति अन्त में अवरोह मूला हो गई है जिसे योग के चिह्न ‖ + ‖ के बाद ऋण के ‖ चिह्न ‖ – ‖ के द्वारा अंकित किया गया है ।

सूत्र मूलक दृष्टि से

प्रथम / 2 2 = ‖

द्वितीय/ 2 3 + ‖

तृतीय / 3 2 + ‖

चतुर्थ / 2 3 + – ‖

नीचे कतिपय अन्य उदाहरण देकर हिन्दी में सुर की स्थिति को देखने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

2 2 3 4
श्याम घर गया ?

संरचनात्मक रूप में यह वाक्य कथन मूलक है, लेकिन प्रयोजन की

दृष्टि से यह वाक्य प्रश्न मूलक है । ऐसी स्थितियों को विशिष्ट ही माना जा सकता है, सामान्य नहीं । प्रस्तुत उदाहरण मे स्तरीय दृष्टि 'घर' तक है, अर्थात् सुर की दृष्टि से 'श्याम' और 'घर' समान स्तर पर हैं, 'गया' क्षिप्ततर सुर है । इस प्रकार उक्त उदाहरण में 'श्याम' और 'घर' सुरात्मक दृष्टि से एक परिवृत में है, 'गया' दूसरे में ।

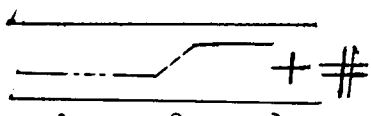

इस उदाहरण में 'श्याम' पर स्तरीय सुर है । यह वाक्य आरोही सुरमूलक है । 'श्याम' की अपेक्षा 'घर' पर सुर क्षिप्ततर और 'गया' के 'ग' पर क्षिप्ततम है । 'या' तक पहुँच कर सुर अवरोह मूलो होकर परिणति के समय । पर पहुँच गया है । इस वाक्य में विस्मय-समन्वित प्रश्न है ।

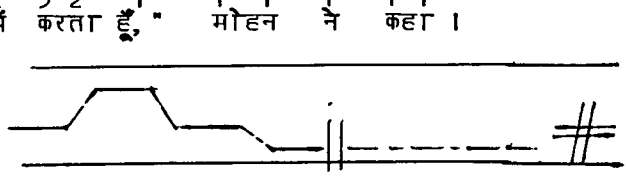

इस उदाहरण में पहले उपवाक्य का अन्तिम सुर-स्तर ही अगले उपवाक्य में अवरोहमूलक हो गया है ।

2 2 2 3 2 2 3 2 1
मोहन ने कहा, मैं करता हूँ।"

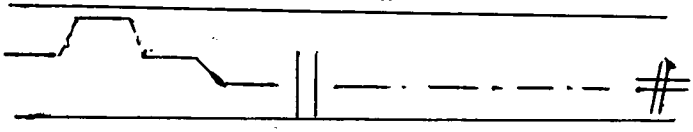

इस वाक्य में पहले उपवाक्य का अन्तिम सुर-स्तर दूसरे वाक्य के प्रथम सुर-स्तर तक प्रसरित है। आगे उसमें अपेक्षाकृत अधिक क्षिप्रता आ गई हैं, जो तुरन्त अवरोही होकर अन्त में। पर आकर परिणति को पहुँच गई है।

2 2 3 2 3 3 2 1 4 3 2 2 1
तुम्हारे लिए। जी चाहता है, सब कुछ कर डालूँ।

इस उदाहरण में भावावेश मूलक विभिन्न स्थितियाँ हैं। वाक्यांशों और उपवाक्यों की इस संरचना में प्रथम वाक्यांश में स्नेह-मूलक सम्बोधन है। इसमें 'लिए' के आदि भाग पर अपेक्षाकृत क्षिप्रतर सुर है जो अपेक्षित उतार के कारण स्तरीय सुर पर गा गया है। दूसरे उपवाक्य में एकाक्षरी पद 'जी' पर सुर फिर क्षिप्रतर होकर 'चाहता' के आदि भाग 'चाहे' तक जाकर स्तर पर आ गया है। 'है' तक पहुँचते-पहुँचते यह अवरोही होकर स्तरीय सुर से भी नीचे आ पहुँचा है। तीसरे वाक्यांश 'सब कुछ' में 'सब' पर सुर क्षिप्रतम हो गया है, तदुपरान्त 'कुछ' पर अवरोही होता हुआ अन्तिम वाक्यांश के 'कर' पर स्तरीय

होकर 'डालूँ' के आदि भाग तक प्रसरित होता हुआ 'लूँ' पर पहुँच कर स्तर से भी नीचे पहुँच परिणति को प्राप्त होकर समाप्त हो गया है । सुर की विभिन्न सापेक्षिक स्थितियों और क्षेत्रगत वैविध्य को दिखाने के लिए ही यह वाक्य लिया गया है । हिन्दी भाषा में ऐसी अनेक स्थितियाँ सम्भव हैं । सुर परिवर्तन क्षेत्र अनुभूति एवं विचारणा की अनेकता के कारण विविधतापूर्ण है । लेकिन निम्नतम स्थिति 4 तक ही सम्भावित है । गिरते-गिरते यह 1 तक भी आ जाती है ।

हिन्दी वाक्य और बलाघात :

हिन्दी में बलाघात दो प्रकार का पाया जाता है -- शब्दान्तर्गत अक्षरमूलक, वाक्यान्तर्गत शब्दमूलक ।[1] चूँकि प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी वाक्य से सम्बद्ध है, अतः यहाँ वाक्यों में पाए जाने वाले बलाघात पर विचार करना ही अभिप्रेत है ।

वाक्यान्तर्गत बलाघात : हिन्दी में वाक्यान्तर्गत बलाघात तीन प्रकार के पाए जाते हैं -- प्राथमिक, द्वितीय, तृतीय ।

हिन्दी में प्राथमिक बलाघात प्रायः दो उपवाक्यों के संयोजन-तत्त्वों में पाया जाता है ।

मोहन ने जाते ही कहा कि मैं नहीं जाऊँगा ।

1- डॉ० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 342

गोविन्द से कह दो कि वह इधर न आए ।

राम जाने को तैयार बैठा है पर जा ही नहीं सकता ।

सामान्यतया हिन्दी में बलाघात संज्ञा पद और क्रिया पदों पर रहता है । संयोजक तत्त्वों पर पाया जाने वाले यह बलाघात विशेष स्थितिमूलक है ।

एक पदीय वाक्य :- बलाघात एक शब्द वाले वाक्यों में भी पाया जाता है ।

मोहन ।

ठहरो

नाटकीय सम्वाद :- हिन्दी नाटकों में जब कथन उत्तेजनात्मक होता है, तब बलाघात का पर्याप्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है ।

अम्बिका : ग्राम के लोग उसे उतना नहीं जानते जितना मैं जानती हूँ ।— मैं उससे घृणा करती हूँ ।

मल्लिका : माँ ।

अम्बिका : कैसी विचक्षणाता है ।

निक्षेप : विचक्षणाता [1]

ऐसी स्थिति में बलाघात प्राथमिक रहता है, क्योंकि द्वितीय अथवा तृतीय के साथ किसी प्रकार की सापेक्षता का प्रश्न नहीं रहता ।

1- डॉ० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 342

हिन्दी वाक्य और सुर-क्रम :

हिन्दी में दो प्रकार का सुरक्रम पाया जाता है । एक का सम्बन्ध वक्ता की बदलती हुई मनःस्थिति से होता है । इस स्थिति में क्रम में परिवर्तन अथवा अपरिवर्तन से कोई अन्तर नहीं आता । दूसरे का सम्बन्ध क्रमान्तर से होता है । इसमें वक्ता की मनःस्थिति का महत्व गौण होता है, क्रम स्वयं निर्णायक होता है ।[1] हम दोनों प्रकार के उदाहरण लेकर हिन्दी की इस महत्वपूर्ण औद्भूति को चित्रित करने का प्रयास कर रहे हैं ।

क्रमान्तर और सुरक्रम :-

आप पुस्तक पढ़ लें ।

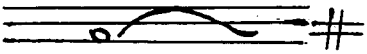

पुस्तक आप पढ़ लें ।

क्या करोगे ?

करोगे क्या ?

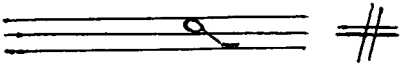

तुम तो हो ।

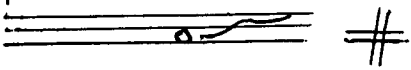

हो तो तुम ।

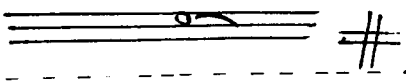

1- डॉ० सुधा कालरा " हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 343

भला आदमी है ।

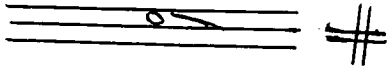

आदमी भला है ।

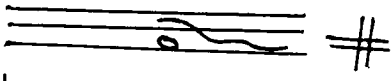

मैं हूँ ही नहीं ।

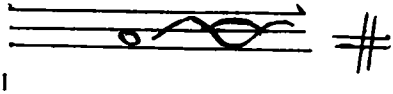

मैं ही नहीं हूँ ।

क्रमान्तर न होने पर भी विराम-चिह्नों के परिवर्तन से एक ही वाक्य होने पर भी सुर क्रम में भिन्नता आ जाती है ।

'आज गर्मी है' (सामान्य कथन) 'आज गर्मी है'? (प्रश्न मूलक)

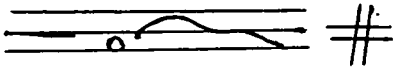

'आज गर्मी है ! (विस्मय मूलक)

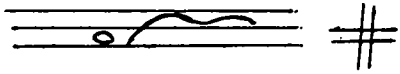

वक्ता की मनःस्थिति और सुर-क्रम :

वक्ता की मनःस्थिति के अनुसार कुछ वाक्यों में अर्थाश्रित सुर-क्रम मूलक भिन्नता पाई जाती है ।

आइए पधारिए ! (प्रार्थना मूलक)

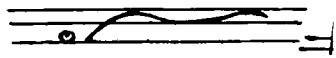

काम करिए । (आदेश मूलक)

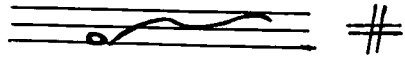

गधे का बच्चा । (अपशब्द)

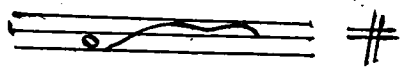

उसका बुरा हो । (अभिशाप मूलक)

खुश रहो । (वरदान मूलक)

एकपदीय वाक्य :- एक पदीय वाक्यों में भी सुरक्रम के द्वारा विभिन्न अर्थों की योजना सम्भव हो सकती है ।

अच्छा (सहज स्वीकृति)

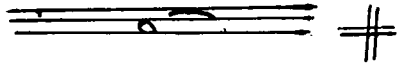

अच्छा (सन्देह)

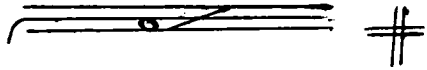

अच्छा ? (प्रश्न)

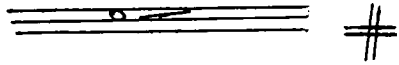

अच्छा ! (विस्मय)

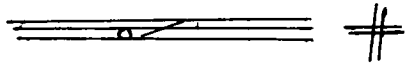

हिन्दी में पाई जाने वाली सुरक्रम मूलक ध्वनि की ओर संकेत करने के पश्चात यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि हिन्दी भाषा इस दृष्टि से बड़ी समृद्ध है । अर्थ-विच्छित्ति की दृष्टि से

सुरक्रम-मूलक अर्थ भेदों में पाए जाने वाले अर्थ - वैविध्य के मूल्यांकन के लिए हिन्दी में बहुत अवकाश है ।

हिन्दी वाक्य और विराम :-

वाक्य के अन्तर्गत अर्थ-बोधमूलक सीमान्तों अथवा संकेतों का होना अनिवार्य है। ये सीमान्त अथवा संकेत अवधि-सापेक्ष होते हैं । वस्तुतः ये सीमान्त अथवा संकेत ही विराम हैं । विराम दो प्रकार के होते हैं -- सीमान्तिक और योगमूलक ।[1]

सीमान्तिक विराम :- स्थूल रूप से सीमान्तिक विराम तीन प्रकार के होते हैं -- स्तरीय, निम्नाभिमुख और उच्चाभिमुख । स्तरीय विराम से अपूर्ण कथन का बोध होता है, इसके बाद लगता है कि कुछ कथ्य शेष है । निम्नाभिमुख विराम के पश्चात् निरन्तर हल्की होती हुई ध्वनि प्रसंग के एक पूर्ण अंश की समाप्ति का बोध कराती है । उच्चाभिमुख विराम में निरन्तर तेज़ी होती हुई ध्वनि से प्रसंग के एक अंश की परिसमाप्ति का बोध होता है ।[2]

स्तरीय विराम :- स्तरीय विराम के चार भेद हो सकते हैं । वाक्य के भीतर किसी पद अथवा वाक्यांश के समानाधिकरण अथवा व्याख्या-परक वाक्यांश से पूर्व आने वाला अल्प विराम, दो समकक्षीय

1- डॉ० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 346

2- - वही - - वही -

अथवा समान स्तर वाले वाक्यों अथवा उपवाक्यों के बीच में आने वाला अपेक्षाकृत दीर्घ विराम, पूर्ववर्ती वाक्य में स्पष्ट न होने वाले अर्थ को विस्तार के साथ अभिव्यक्त करने वाले वाक्य अथवा उपवाक्य से पूव आने वाला अपेक्षाकृत दीर्घतर विराम, भावावेश के चरम पर पहुँच कर व्याकरणिक दृष्टि से अपूर्ण वाक्य के बाद आने वाला विराम । पहला स्तरीय सीमान्तिक विराम लिखित भाषा में ( ) के द्वारा, दूसरा (,) के द्वारा, तीसरा (:) के द्वारा और चौथा (:– या –) के द्वारा व्यक्त किए जाते हैं ।[1] इस प्रसंग में द्रष्टव्य यह है कि इन सब प्रकार के स्तरीय सीमान्तिक विरामों के पश्चात् प्रसंगत पूर्णता की दृष्टि से अर्थ की आकांक्षा बनी रहती है ।

हिन्दी के विरामों को निम्नांकित रूपों में सूचित किया जा रहा है ––

1/ (।) = । , (,) = ।। , (:) = ।।। , (:–या–) = ।।।

(...–) =

पुल पर एक दीखा था पर यहाँ तो ठीक है ।[2]

शेखर को एक ओर पहरा देने के लिए नियुक्त किया गया ।[1]

युवक को दूसरी ओर ।[2]

आप कहते [1]: बनता है ?[2] जमा रहा है ,[3]

फिर यों शरमाने से लाभ भी कुछ नहीं था ।[4]

दिन छिपे तक लौट आऊँगी [1]- घबराना मत ।[2]

स्वीकार तो अब भी नहीं किया [1]- पर आज समझ गई [2].

मैं [3]... कला से आगे चली गई हूँ [4]...[1]

निम्नाभिमुख विराम :-

निम्नाभिमुख विराम प्रश्नमूलक अथवा विस्मयमूलक वाक्यों को छोड़कर अन्य सब प्रकार के वाक्यों की परिसमाप्ति पर पाया जाता है । इस विराम की उपस्थिति पर वाक्य की अन्तिम ध्वनि निरन्तर धीमी होते होते विलीन हो जाती है ।[1]

मेरे विचार से [1] बहुत बड़ी तृप्ति मिलती है [1] (सामान्य कथन)

वह चार पाँच दिन घर से नहीं निकला ।[1] (निषेधमूलक)

अभी यह काम समाप्त करना हो ।[1] (आदेश मूलक)

मैं चाहती हूँ [1] कि तुम एक महारथी विदूषी बनो [2]
(इच्छामूलक)

उच्चाभिमुख विराम :

उच्चाभिमुख विराम सामान्यतया दो प्रकार के वाक्यों में पाया जाता है — प्रश्नमूलक एवं विस्मयमूलक । इस विराम की उपस्थिति पर अन्तिम ध्वनि उच्च से उच्चतर होती हुई विलीन हो

1- डॉ० सुधा कालरा - " हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 347

जाती है ।[1]

इस प्रशान्ति में [1] सिमटे हुए आलोक में भी [2],

चीत्कार है ?[3] क्या क्रन्दन है [4]

बहुत ऊँची कल्पना है, [1] लिख चुके क्या ?[2]

योगमूलक विराम :-

योगमूलक विराम वाक्यांश की सीमाओं के भीतर आते हैं । इस प्रकार के विरामों का अर्थ - बोध की दृष्टि से वही महत्व है जो वाक्यांशों का वाक्यों में होता है । इस विराम के कारण पद विच्छिन्न होकर विकारी पद का अभिधान ग्रहण कर लेते है ।[2] योग-मूलक विराम चिह्न + है ।

पद	विकारी	
नलकी	नल [1] + की [2]	1 + 2
पालकी	पाल [1] + की [2]	1 + 2
ढोलकी	ढोल [1] + की [2]	1 + 2
धोखा	धो [1] + खा [2]	1 + 2

अनुच्छेदमूलक विराम :

वाक्य पूर्ण की आंशिक पूर्ण इकाई है । इन आंशिक पूर्ण इकाइयों के योग से वृहद् अंश अनुच्छेद की संरचना होती है । इन

1- डॉ० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०-347

2- - वही - - वही -

वृहद् अंशों के योग से पूर्ण की रचना सम्भव होती है । पूर्ण के नियोजक इन वृहदंशों के बीच भी विराम होता है । वाक्य के भीतर जिस प्रकार आकांक्षा-मूलक विराम होता है, उसी प्रकार का विराम अनुच्छेदों के बीच होता है । कालक्षेप की दृष्टि से अनुच्छेदों के बीच आया हुआ यह विराम वाक्य के भीतर आए हुए विराम से अपेक्षाकृत दीर्घकालिक होता है । अर्थ की दृष्टि से यह स्तरीय, निम्नाभिमुख एवं उच्चाभिमुख हो सकता है । विचार क्रम जब विस्मय और प्रश्नमूलक नहीं होता तब यह प्रकृत्या स्तरीय होता है । जहाँ निष्कर्ष अपेक्षित होता है वहाँ निम्नाभिमुख होता है और जब विस्मय एवं प्रश्न की सम्भावनाएँ होती हैं तब उच्चाभिमुख होता है ।[1] इन विरामों को हम निम्न लिखित चिह्नों द्वारा अंकित कर रहे हैं ।

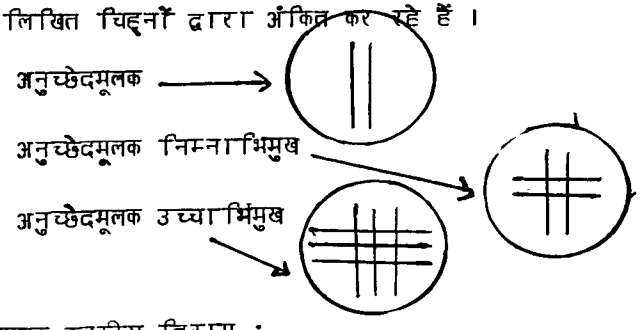

अनुच्छेदमूलक स्तरीय विराम :

मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है जो इसी प्रकार ज़माने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें

1- डा० सुधा कालरा - "हिन्दी वाक्य विन्यास" पृ०- 348

धक्का मार कर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं ।[1]

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ।[1]

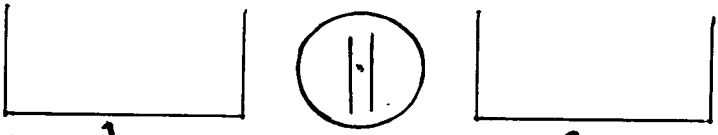

अनुच्छेदमूलक उच्चाभिमुख :-

शिरीष की मस्ती को देखो । लेकिन अनुभव ने मुझे बताया है कि कोई किसी की नहीं सुनता । मरने दो ।[1]

कालिदास वज़न ठीक रख सकते थे क्योंकि वे अनासक्त योगी की स्थिर-प्रज्ञता और विदग्ध-प्रेमी का हृदय पउ चुके थे ।----[2]

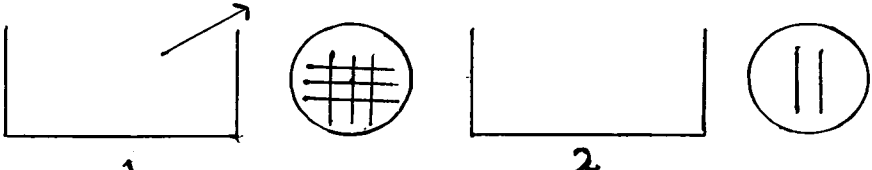

.... तब यह सोचकर कि दाखिले के दिनों के बाद भी जाने पर तो ले ही जाएगा, उसने कह दिया था, "अभी काफी है ।" किन्तु शाशि के फिर वहीं प्रश्न पूछने पर उसने कहा था --'क्यों' ?[1]

" आप आगे पढ़ेंगे नहीं "[2]

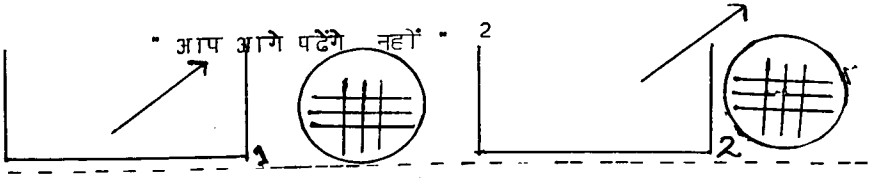

1. Stokeo, H.R :- The understanding of Syntax, Page. 25.
2. Same p.25.

.... क्यों स्वाधीनता दी थी निर्णय की ? क्यों दोनों सूरतों में सहानुभूति का वचन दिया था ? [1]

उसे याद आया कि उसने क्या लिखा था ... यह मामला शाश्वत का है, शाश्वत के अतिरिक्त किसी का भी नहीं और इसमें परामर्श भी किसी का ग्राह्य नहीं है .... [2]

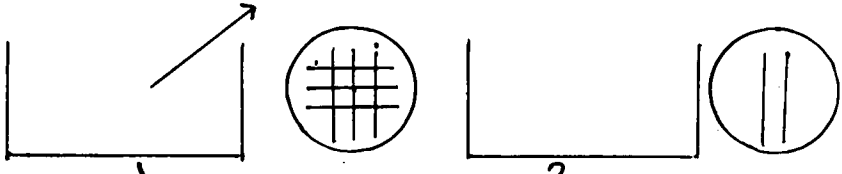

अनुच्छेदमूलक निम्नाभिमुख --

.... फूल हो या पेड़, वह अपने आपेमें समाप्त नहीं है, वह किसी अन्य व्यक्ति को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुलीहै व इशारा है । [1]

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगे जगा देता है जो अमर की ओर उठती रहती है । --- शिरीष वायुमण्डल से रस सींच कर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था । मैं जब जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब तब हूक उठती है -- हाय, यह अवधूत आज कहाँ है । [2]

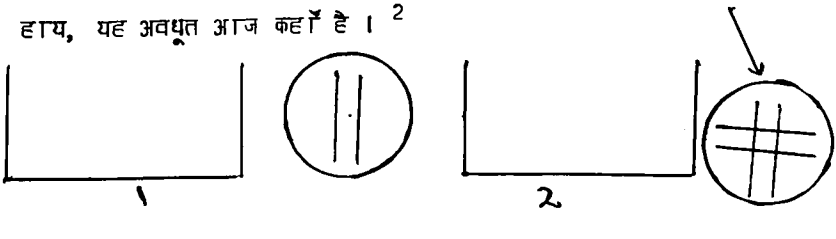

यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता क्योंकि मैं उसकी बेहद कद्र करती हूँ, और उसमें मुझे प्रेरणा, हिम्मत और हौसला मिलता है। मेरी इस आकांक्षा की दृष्टि के लिए और भारत की संस्कृति को श्रद्धांजलि के रूप में भेंट करने के लिए मैं यह दरखास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए जिससे कि वह उस महासागर में पहुँचे जो हिन्दुस्तान को घेरे हुए है। [1]

मेरे भस्म के बाकी हिस्से का क्या किया जाए ? मैं चाहता हूँ कि इसे हवाई जहाज़ में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए उन खेतों पर जहाँ भारत के किसान मेहनत करते है, ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसी का अंग बन जाए। [2]

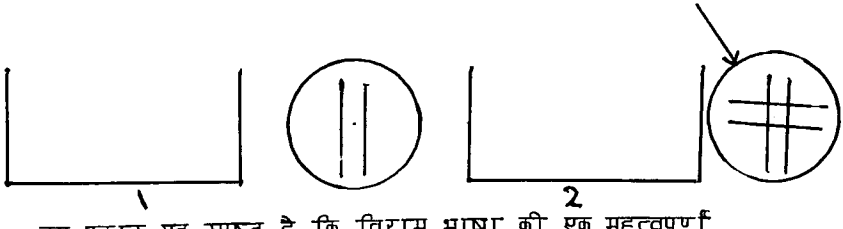

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विराम भाषा की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। भाषा की सब इकाइयों में इसकी सत्ता विद्यमान है।

- 0 -